IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थी के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी

ज्योति मिश्रा

सरदार पटेल यूनिवर्सिटी

बालाघाट (म.प्र.)

शोध निर्देशक

डॉ. किरण त्रिपाठी

सरदार पटेल युनिवर्सिटी

बालाघाट (म.प्र.)

सारांश – अध्ययनकर्ता द्वारा "दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थी के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया है। उद्देश्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण विद्यार्थियों, बालक एवं बालिकाओं का अगल–अलग उद्देश्यों पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् समस्त दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। चुने गये प्रतिदर्शन के रूप में 50 दिव्यांग एवं 50 सामान्य विद्यार्थियों को उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि द्वारा जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से चयनित किया गया है जिसमें 25 दिव्यांग बालक एवं 25 बालिकाएँ छात्राएँ एवं 25 सामान्य बालक एवं 25 सामान्य बालिकाओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली को मापने के लिए डॉ. के.एस. मिश्र द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन के लिए मध्यमान प्रमाणित विचलन, टी परीक्षण सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात होता है कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा भिन्न–भिन्न तरह के अधिगम शैलियों का प्रयोग किया जाता है जिसका कारण यह हो सकता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की समस्याओं के कारण उनमें शैक्षिक कार्यों के बीच आने वाली समस्याएँ सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च होती है जिसके कारण वह अधिगम शैलियों के विभिन्न प्रकारों को अपना कर अपने शैक्षिक कार्यों में वृद्धि करते हैं।

की–वर्ड– दिव्यांग, सामान्य विद्यार्थी, अधिगम शैली

प्रस्तावना– मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है। जीवन की उदात्ता, उच्चता, सौन्दर्य और उत्कृष्टता शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। बालक की वैयक्तिक प्रगति, उसका शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नही हो सकता जब तक वह शिक्षा ग्रहण न करें।

बालकों को सोचने का अपना एक विशिष्ट होता है। प्रत्येक बालक एवं बालिकाएँ अपने शैक्षिक काल में एक विशेष अध्ययन आदतों का पालन करता है जिसके द्वारा वह अपने विद्यालयी कार्यों को पूरा करता है। प्रायः यह देखा जाता है कि कुछ बालक एवं बालिकाएँ अध्यापक द्वारा पढ़ाते समय नोट्स बनाते है जबकि कुछ विद्यार्थी नोट्स नहीं बनाते, कुछ विद्यार्थी अपने अध्ययन विषयों को नियमित बनाने के लिए समय सारणी बनाते है। कुछ बालक एवं बालिकाएँ समूह अध्ययन विधि अपनाते है जबकि कुछ विद्यार्थी अपना अधिकांश समय व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने में व्यतीत करते है। कुछ पूर्ण गम्भीरता से अपना गृह कार्य करते है। जब कुछ अपने गृह कार्य को थोड़या बिल्कूल भी ध्यान नहीं देते है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्यार्थी संगीत सुनकर अध्ययन करते है जबकि कुछ विद्यार्थी एकान्त में बैठकर अध्ययन करने की आदत होती है। वास्तव में प्रत्येक बालक–बालिकाओं में अपने विद्यालयी कार्यों को पूरा करने की विशेष पद्धति अथवा ढंग होता है। इस विशेष पद्धति अथवा ढ़ंग द्वारा सीखना या ज्ञान की प्राप्ति करना अध्ययन आदत कहलाती है।

प्रत्येक बालक प्रभावी ढंग से सीखने के लिए अपनी शैली (ढ़ंग) विकसित करता है। सीखने के ढंग को अधिगम शैली का नाम दिया जाता है। उक्त वर्णन से काफी सीमा तक यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अधिगम शैली में बालक सामंजस्य स्थापित करता है अर्थात अधिगम शैली के निर्धारक के रूप में कार्य करती है। अधिगम शैली के प्रयोग से विद्यार्थियों के अधिगम कार्यों के साथ–साथ उनके उपलब्धि में वृद्धि होती है। पूर्व अध्ययन में **हैरिसन (2013)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– विद्यार्थियों में अधिगम शैली के आयामों अन्तर्मुखी, परख, विचार एवं न्याय पूर्ण रूप से पाया गया। **डेनिज (2019)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों के अधिगम शैली के विभिन्न आयामों भिन्न दिशाओं में जाना, समावेशी, समझौता एवं अभिमुख का उनके अध्ययन आदत से सहसम्बन्ध पाया गया। **मुटुवा (2015)** ने निष्कर्ष में पाया कि– अधिगम शैली के तीनों आयाम दृश्य–अश्रव्य एवं गति संवेदन का छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **यासमिन एवं अन्य (2016)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– विद्यार्थियों के अधिगम शैली के आयाम समावेशी समूह का उनके शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

वर्तमान में जहाँ सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ दिव्यांग बालकों को भी आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षित करने एवं उन्हें रोजगार से जोड़ने का कार्य बहुत तेजी से हो रहा है। वर्तमान में शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत समावेशी शिक्षा लागू कर सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा ग्रहण करने के प्राविधान के कारण सामान्य बच्चों के साथ दिव्यांग बच्चे भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अतः अध्ययनकर्ता द्वारा दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली के बीच अन्तर को देखने का प्रयास किया गया है। चूँकि अधिगम शैली से अधिगम योग्यता और अधिगम योग्यता से उपलब्धि प्रभावित होती है।

समस्या कथन–

"दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थी के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है।

- दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

- दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् समस्त दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श प्रविधि एवं न्यादर्श

चुने गये प्रतिदर्शन के रूप में 50 दिव्यांग एवं 50 सामान्य विद्यार्थियों को उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि द्वारा जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से चयनित किया गया है जिसमें 25 दिव्यांग बालक एवं 25 बालिकाएँ छात्राएँ एवं 25 सामान्य बालक एवं 25 सामान्य बालिकाओं का चयन किया गया है।

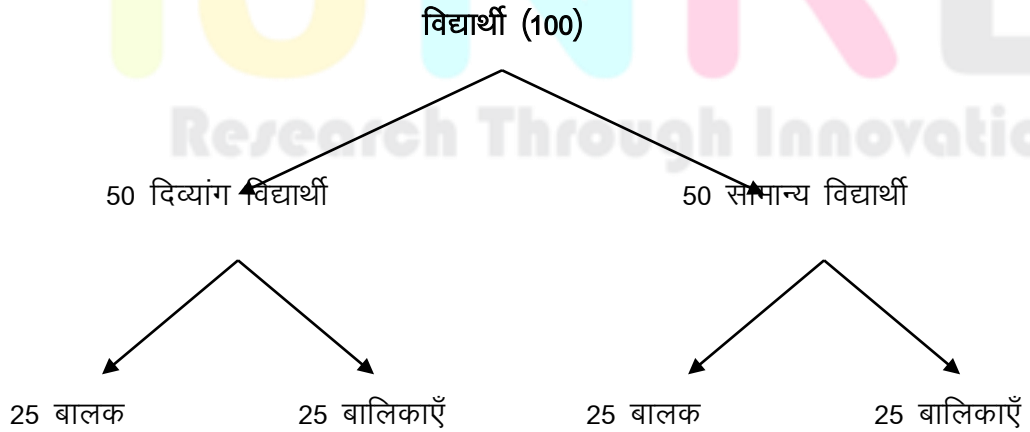

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन में दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली को मापने के लिए डॉ. के.एस. मिश्र द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इस अनुसूची में 42 कथन है, जो छात्रों की भिन्न–भिन्न अधिगम शैलियों पर आधारित है। प्रयुक्त उपकरण में एल्फा विश्वसनीयता की गणना की गई। जिसमें तीन अधिगम शैलियों

क्रियात्मक, आकृत्यात्मक तथा शाब्दिक अधिगम शैली की विश्वसनीयता मान क्रमशः .682, .742 तथा .903 है (N=50)। अधिगम शैली अनुसूची की आन्तरिक वैधता अधिगम शैलियों के बीच गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध विधि द्वारा पाई गई।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन के लिए मध्यमान प्रमाणित विचलन, टी परीक्षण सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली का तुलना –

सारणी सं. 1

लिंग के आधार पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

प्रतिदर्श	N	M	SD	M1~M2=D	σ_D	t	सार्थकता स्तर	सारणी मान
दिव्यांग विद्यार्थी	50	136.97	13.51	11.27	1.84	6.12	0.5	t. 05=1.97 t. 01=1.60
सामान्य विद्यार्थी	50	125.70	13.51					

.05 स्तर पर सार्थक

N=200

व्याख्या :

सारणी–1 से स्पष्ट है कि परिगणित 'टी' का मान 6.12 है, जो स्वतंत्रान्श 198 के लिए .05 एवं .01 विश्वास स्तर पर सारणी 'टी' के क्रान्तिक मान 1.97 एवं 260 से अधिक है। अतः परिगणित 'टी' मान .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए प्रथम परिकल्पना, दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नही है, को अस्वीकृत किया जाता है। अस्तु दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग विद्यार्थी के बालक–बालिकाओं का अधिगम शैली सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

2. दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली का तुलना

सारणी सं. 2

दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

प्रतिदर्श	N	M	SD	M1~M2=D	σ_D	t	सार्थकता स्तर	सारणी मान
दिव्यांग बालक	25	135.68	13.39	11.34	2.96	3.83	0.5	t. 05=1.98 t. 01=2.63
सामान्य बालक	25	124.34	16.07					

.05 एवं .01स्तर पर सार्थक

N=50

व्याख्या :

सारणी–2 से स्पष्ट है कि परिगणित 'टी' का मान 3.83 है, जो स्वतंत्रान्श 98 के लिए .05 एवं .01 विश्वास स्तर पर सारणी 'टी' के क्रान्तिक मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिगणित 'टी' मान .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए प्रथम परिकल्पना, दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नही है, को अस्वीकृत किया जाता है। अस्तु दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग बालकों का अधिगम शैली सामान्य बालकों के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

3. दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली का तुलना

सारणी सं. 3

दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं की अधिगम शैली में अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

प्रतिदर्श	N	M	SD	M1~M2=D	σ_D	t	सार्थकता स्तर	सारणी मान
दिव्यांग बालिकाएँ	25	138.26	11.43	11.20	2.16	5.18	0.5	t. 05=1.98 t. 01=2.63
सामान्य बालिकाएँ	25	127.06	10.15					

व्याख्या :

सारणी–3 से स्पष्ट है कि परिगणित टी' का मान 5.8 है, जो स्वतंत्रान्श 98 के लिए .05 एवं .01 विश्वास स्तर पर सारणी 'टी' के क्रान्तिक मान 1.98 एवं 2.63 से अधिक है। अतः परिगणित 'टी' मान .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए प्रथम परिकल्पना, दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नही है, को अस्वीकृत किया जाता है। अस्तु दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग बालिकाओं का अधिगम शैली सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग विद्यार्थी के बालक–बालिकाओं का अधिगम शैली सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग बालकों का अधिगम शैली सामान्य बालकों के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।
- दिव्यांग एवं सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है अर्थात् दिव्यांग बालिकाओं का अधिगम शैली सामान्य बालिकाओं के अधिगम शैली की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात होता है कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा भिन्न–भिन्न तरह के अधिगम शैलियों का प्रयोग किया जाता है जिसका कारण यह हो सकता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की समस्याओं

के कारण उनमें शैक्षिक कार्यों के बीच आने वाली समस्याएँ सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च होती है जिसके कारण वह अधिगम शैलियों के विभिन्न प्रकारों को अपना कर अपने शैक्षिक कार्यों में वृद्धि करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता,एस.पी. (2011). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. (2010). आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. (2011). अनुसन्धान संदर्शिका, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गैरेट, एचई. (1989). शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, ग्यारहवाँ हिन्दी संस्करण, कल्याणी पब्लिशर्स।
- पाण्डेय, के.पी. (2011). शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- पाण्डेय के.पी. (2005), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- पाल, मोहन गुप्त (2007), शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद न्यू कैलाश प्रकाशन।
- राय, पी.एन. (2007). अनुसंधान विधियाँ, आगराय अर्चना प्रिटिंग प्रेस।
- वाजपेयी, एल.बी. (2004), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समसामयिक प्रवृत्तियां आगरा : आलोक प्रकाशन।
- सिंह, अरूण कुमार (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन।
- Harrison, Shannie (2013). An Investigation of the Learning styles and Study Habits of Chemistry Undergraduates in Barbados and their Effect as Predictors of Academic Achievement in Chemical Group Theory. ISSN 2239-978X Journal of Educational and Social Research Vol. 3 (2) May 2013, pp. 107.
- DENIZ, Sabahattin (2013). Analysis Of Study Habits And Learning Styles In University Students, Ocak 2013 Cilt:21 No:1 Kastamonu Eğitim Dergisi 287-302, January 2013 Vol:21 No:1 Kastamonu Education Journal.
- Nzesei, Mutua, Meshack (2015). A Correlation study between Learning Styles and Academic Achievement among Secondary School Students in Kenya, Department of Psychology, University of Nairobi.
- Yasmin, Fakhra (2016). The Impact Of Perceptual Learning Styles On Academic Performance Of Masters' Level Education Students, Sci. Int.(Lahore),28(3),2953-2958 , ISSN 1013-5316; CODEN: SINTE 8 2953 May-June 2016.